१०४. मानव ही अखण्डता, सार्वभौमता का धारक-वाहक है

०३-१०-२०१३

मानव ज्ञानावस्था में होने के आधार पर इस बात को अच्छी तरह से परीक्षण किया | मानव क्या, सर्वमानव समझदार होना चाहता है कि नहीं? इस शोध में यह पता चला कि मानव ही एकमात्र इकाई है जो समझदार होना चाहते हैंचाहता है; जिसके लिये आदिकाल से अर्थात जब से मानव धरती पर अवतरित हुआ तब से प्रयत्न कर रहा है | सर्वप्रथम जीवों से जूझने के क्रम में चले हैं | ऐतिहासिक, प्राकृतिक विधि से जीता रहा मानव, विभिन्न रंग, नस्ल के आधार पर जीते आया | सब ने इस बात का अपेक्षा देखा कि सर्वदेश कालीय मानव समझदार होकर जीना चाहता है | इसी आधार पर पूरा विकल्प तैयार हुआ | विकल्प ही एकमात्र आस है | सभी विधा को जाँचा है समाधान के अर्थ में अथवा अनुभव के अर्थ में अथवा जागृति के अर्थ में | तीनों प्रकार से जाँचने पर पता चला, केवल मानव ही समझदारी का धारक वाहक है | नासमझी पूर्वक ही सभी गलतियाँ करता है |

समझदारी पूर्वक ही बदलता है | समझदारी ही आचरण के रूप में पहचानने के रूप में आया | आचरण ही मानव का प्रमाण है | इसमें इस विधि से मानव जात को शोधने का तरीका बना | इस क्रम में हर मानव किसी देश काल में होना होता है, अपने मनमानी विधि से जीता है | मनमानी का मतलब देश, काल के आधार पर जीना | विभिन्न परिस्थितियां देश, काल रूप में ही देखने को मिलता है | इसी धरती पर सूर्य का रश्मि तीन प्रकार से होना गणना करने में आया है | इस प्रकार की नजरिया से देखने पर धरती को तीन खण्डों में देखा- ऊष्ण, समशीतोष्ण, शीतवलय के रूप में धरती को पहचाना | इसी प्रकार अत: इसी विधि से ५ खंड में पूरा धरती देखने को मिला | इसके लिये सर्वेक्षण कार्य को सार्थक माना | उसमें ऊँचे नीचे जंगल, पानी, धरती का पहचान किया | आरंभिक स्थिति से जो पहचाना; उसके अनुसार तीन भाग में पानी, एक भाग में धरती | एक भाग की धरती में तीन भाग जंगल, एक भाग कृषि योग्य जमीन को पहचाना | ये सामान्य सोच है | इस सोच के अनुसार मनुष्य की व्यवस्था रहती है | धरती पर जंगल को रिजर्व और गुजारू के रूप में देखा | गुजारू का एक तिहाई भाग जंगल रहा | यही गुजारू जंगल अभी का स्थिति में उपजाऊ जंगल के रूप में परिणत हो गया |

ये सब खाने पीने के अर्थ में ही रहा विशेषकर | आंशिक रूप में निवास के रूप में रहा | इस क्रम में विधिवत धरती में मनुष्य उपयोग करते आया | इसी के साथ खनिज वस्तुओं को भी उपयोग किया | विशेष खनिज कोयला, खनिज तेल | उसके बाद धातुएं, उसके बाद मणि को लेकर खनिजों को प्रयोग किया | ये सब को सम्पदा माना | सम्पदा का स्थिति एक समुदाय में हुआ | ऐसे समुदाय अनेक हो गये | हर समुदाय दूसरे समुदाय से जूझना शुरुआत हुआ | आज का स्थिति में ऐसा जुझारुता प्राथमिक स्थिति में आ गया | यही अन्ततोगत्वा युद्ध कहलाता है | उसके पहले संघर्ष रहता ही है | संघर्ष का स्थिति में शिक्षा-संस्कार समाहित रहता है | इस ढंग से मानव जीने का तरीका व्यवहार से मानसिकता तक सोचा | सोचने के क्रम में ही संघर्ष, युद्ध, तीनों उन्माद स्पष्ट हुआ | इस क्रम में मानव सर्वाधिक अपराध, गलती करने में समर्थ हुआ |

इसको विकास माना | आदर्शवाद का आवाज इसके विपरीत में भी कुछ रहा | इससे अनुप्राणित होकर मैंने सोचा, फलस्वरूप विकल्प तैयार हुआ | विकल्प के अनुसार इतने दिन के श्रम के फलन में जो पाये हैं, ये सब सामरिक तंत्र, उन्माद तंत्र, ये सब सुविधा, संग्रह में परिणत हुआ | इसे विकल्प नहीं माना | इसको अपराध और गलती ही माना | मनुष्य को

सुख,शांतिपूर्वक जीने की तमन्ना आदिकाल से रहा है | इसी क्रम में जीवों के साथ जूझा, मानव के साथ जूझा | जुझारुता से मुक्त विधि से जीने के लिए विकल्प तैयार हुआ | विकल्प विधि से ही मानव सुख, शांति, संतोष, आनंदपूर्वक जी सकता है | सुख,शांतिपूर्वक जीने के लिये समाधान, समृद्धि ही रहा | संतोष, आनंदपूर्वक जीने के लिये अनुभव, विचार ही शेष रहा | विचारों का प्रयोग अपराध और उन्माद के लिये हुआ | अपराध, संघर्ष और युद्ध के रूप में, उन्माद गलती के रूप में परिणत हुआ | मानव दीर्घकाल से इसको अपनाते ही आया- गलती और अपराध को |

इससे मुक्त सुख, शांतिसहमति, संतोष, आनंदपूर्वक जीने के लिये विकल्प को तैयार किया | तब मानव को अर्पित किया | मानव जाति का चिरकालीन अपेक्षा के अनुरूप होने के आधार पर इसे हजारों की संख्या में अपनाना देखा गया | आज तक का प्रयोजन विकल्प विधि से ही है | सुख, शांतिपूर्वक जीने का तात्पर्य स्पष्ट हुआ जन मानस में | शांति और आनंदपूर्वक जीने के लिये सोचा | यह अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था के रूप में निर्भर रहने का तथ्य को देखा गया | सर्वमानव, सर्वदेश कालीय मानव इसे स्वीकारन प्रमाणित होने से ही अखण्डता, सार्वभौमता प्रमाणित होना सम्भव हुआ | इसके आधार पर विकल्प का मूल्यांकन होता है | क्रमिक विधि से विकल्प का धारक वाहक मानव ही है, क्योंकि मानव ही ज्ञानावस्था की इकाई है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- **ए. नागराज**